Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 5, MAY - 2022 Publication Date: 15/05/2022

DOIs:10.2018/SS/202205005 --:-- Research Article

समय सापेक्ष ग्रामीण नेतृत्व के परिवर्तित प्रतिमान

डॉ. पुष्पा भट्ट
सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
हुकम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर. महाविद्यालय सोमेश्वर (अल्मोड़ा) - उत्तराखण्ड, भारत
Email – pushpabhatthld@gmail.com

सारांश: ग्रामीण शक्ति संरचना में नेतृत्व का महत्वपूर्ण स्थान है, हमारी सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व पर ही आधारित है। भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात लोक तान्त्रिक समाज की स्थापना हेतु ग्रामीण विकास एवं विकास में ग्रामीणों की सहभागिता को एक महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया गया और इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु गाँवों में अनेक नवीन विकास योजनाएँ एवं कार्यक्रम आरम्भ किये गये। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के प्रभाव से ग्रामीण नेतृत्व के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न हुए है। गाँवों में एक नये प्रजातान्त्रिक नेतृत्व का विकास हुआ है जिसमें युवा एवं मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है, साथ ही गाँवों में राजनीतिक जागरूकता में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है, जिसके फलस्वरूप ग्रामीण नेतृत्व का सामाजिक स्वरूप राजनीतिक स्वरूप में परिवर्तित हो रहा है। वर्तमान में महिलाओं का आरक्षित सीटों के साथ-साथ सामान्य सीटों से भी पंचायतों में निर्वाचित होना ग्रामीण नेतृत्व के परिवर्तित हो रहे प्रतिमानों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। प्रस्तुत शोध पत्र ग्रामीण नेतृत्व के परिवर्तित होते स्वरूप को प्रस्तुत करता है।

मूल शब्द: ग्रामीण नेतृत्व, समय सापेक्ष, परिवर्तित प्रतिमान, राजनीतिक स्वरूप ।

1. प्रस्तावना:

ग्रामीण शक्ति संरचना में नेतृत्व का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक छोटे व बड़े समाज, समूह एवं समुदाय में किसी न किसी रूप में नेता और उसके नेतृत्व रूपी स्वरूप को देखा जा सकता है। किसी भी समाज का गतिमान जीवन चाहे वह ग्रामीण हो अथवा नगरीय, नेता के निर्देशों, सुझावों एवं योजनाओं आदि के आधार पर व्यवस्थित रूप से चलता है, उसके कुशल नेतृत्व से ही सामाजिक जीवन में नियमों और आदर्शों की स्थापना होती है।[1] समाज के सर्वांगीण विकास हेतु सफल नेतृत्व होना आवश्यक है, क्योंकि कुशल नेता अपने कार्यों द्वारा समाज को उचित दिशा की तरफ मोड़ सकता है, परन्तु यदि नेतृत्व गलत हाथों में पहुँच जाय तो समाज को अनेक संकटों का सामना भी करना पड़ता है।[2] प्रत्येक समाज की शक्ति संरचना के अन्तर्गत कुछ व्यक्ति इतने शक्तिशाली एवं सूझ-बूझ वाले होते हैं जो दूसरो को प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा मार्गदर्शन देकर उनकी क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। इस विशेषता को नेतृत्व और ऐसे व्यक्तियों को नेता कहा जाता है।[3] व्यवहारिक रूप में नेतृत्व व्यवहार का वह ढंग है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों के व्यवहार से प्रभावित होने की अपेक्षा अपने व्यवहार से दूसरे व्यक्तियों को अधिक प्रभावित करता है। यह कार्य चाहें दबाव के द्वारा किया गया हो अथवा व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों को प्रदर्शित करके।

भारत में ग्रामीण नेतृत्व का परम्परागत स्वरूप जाति स्तरीकरण पर आधारित रहा है उच्च जाति के लोगों को ही नेतृत्व करने का अधिकार प्राप्त था, निम्न जाति के साधन सम्पन्न अथवा प्रतिभाशाली व्यक्ति को नेता मानना कठिन होता था साथ ही आयु भी ग्रामीण नेतृत्व का प्रमुख आधार रही है, नेतृत्व ऊँची आयु समूहों के हाथों में होता था। इस सन्दर्भ में जन सामान्य की धारणा थी कि वयोवृद्ध व्यक्ति परम्पराओं की रक्षा करते हैं और उनके द्वारा दिया गया नेतृत्व अधिक उपयोगी होता है। परिवार के आकार एवं प्रतिष्ठा के आधार पर नेतृत्व में व्यक्ति को एक विशेष स्थान प्राप्त था गाँव के नेता का मूल्यांकन उसकी राजनीतिक शक्ति के आधार पर नहीं बल्कि उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रवीणता एवं आर्थिक सम्पन्नता के आधार पर किया जाता था। इसके अतिरिक्त ग्रामीण नेतृत्व में आनुवांशिकता का प्रभाव भी रहा है, सम्पूर्ण गाँव में जिस व्यक्ति को एक बार नेता का पद प्राप्त हो जाता है वह साधारणतया उसी की आगामी पीढ़ियों को हस्तान्तरित होता रहता है परिवर्तन तभी होता है जब नेता ग्रामीणों की आकांक्षाओं को पूर्ण न कर सके।[4]

वर्तमान में ग्रामीण नेतृत्व के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन आया है, वयस्क मताधिकार द्वारा पंचायतों के अधिकारियों का चुनाव करने तथा ग्रामीणो को पंचायतों की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ है लोकतन्त्रीकरण की प्रक्रिया एवं शिक्षा के कारण ग्रामीण शक्ति संरचना में अर्जित स्थिति का महत्व बढ़ने लगा है, जिसने ग्रामीण नेतृत्व के आधार को परिवर्तित कर दिया है।[5] देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात एक लोकतान्त्रिक समाज की स्थापना हेतु ग्रामीण विकास को सर्वप्रमुख आवश्यकता के रूप में स्वीकार करने हेतु सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन में ग्रामीणों की सहभागिता को महत्वपूर्ण माना गया और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ग्रामों में अनेक नवीन विकास योजनाएं एवं कार्यक्रम आरम्भ किये गये। इस समग्र प्रक्रिया के प्रभाव से वर्तमान में ग्रामीण नेतृत्व में कई ऐसे नवीन प्रतिमान उभर कर आये हैं, जिनका पूर्ण में अभाव था, आज गाँवों में एक नये प्रजातान्त्रिक नेतृत्व का विकास हुआ है जिसमें व्यक्ति की आनुवांशिक स्थिति का विशेष महत्व नहीं रहा, गाँव का नेतृत्व उन व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित है जो सामान्य ग्रामीणों द्वारा निर्वाचित होते हैं, शिक्षा को ग्रामीण नेतृत्व हेतु आवश्यक समझा जाने लगा है, क्योंकि गाँव में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सम्बन्धों के क्षेत्र में विस्तार होने के फलस्वरूप उसी व्यक्ति से अच्छे नेतृत्व की आशा की जा सकती है जो शिक्षित हो, ग्रामीण नेतृत्व में युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है। युवा वर्ग के क्रियाशील होने के कारण ग्रामीण नेतृत्व में आयु का महत्व भी समाप्त होता जा रहा है। पूर्व में ग्रामीण नेतृत्व में स्त्रियों का महत्व नहीं था, किन्तु अब अनुसूचित जाति, जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के साथ ही महिलाओं के लिए भी पद आरक्षित किये गये हैं। नवीन पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए आरक्षित पदों की संख्या को बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया है। आज महिलाएं आरक्षित सीटों के साथ-साथ अनारक्षित सीटों से भी निर्वाचित होकर पंचायतों में आ रही हैं और पंचायत सम्बन्धी दायित्वों का निर्वाह कर रही हैं। वास्तव में यह ग्रामीण नेतृत्व में उत्पन्न एक ऐसा परिवर्तन है जिसने सम्पूर्ण ग्रामीण शक्ति संरचना के स्वरूप को परिवतर्तित कर दिया है। इस प्रकार ग्रामीण नेतृत्व के परम्परागत प्रतिमान वर्तमान समय में तीव्रता से परिवर्तित हो रहे हैं।

2. उद्देश्य: वर्तमान समय में ग्रामीण नेतृत्व के परिवर्तित होते प्रतिमानों का अध्ययन करना।

3. शोध प्रारूप:

प्रस्तुत अध्ययन हेतु 2014 में हुए पंचायत चुनाव में जिला नैनीताल के हल्द्वानी विकासखण्ड के विभिन्न ग्राम पंचायतो में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को चयनित किया गया है, विकासखण्ड हल्द्वानी के 84 ग्राम पंचायतों में कुल निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या 996 थी जिसमें 566 महिला प्रतिनिधि तथा 430 पुरूष प्रतिनिधि थे। इसमें महिला प्रतिनिधियों की संख्या 50 प्रतिशत से ज्यादा है क्योंकि महिलाऐं अब पंचायतों में आरक्षित सीटों के अतिरिक्त अनारक्षित सीटों से भी निर्वाचित होकर आ रही हैं, जो कि ग्रामीण नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। इसलिए अध्ययन हेतु महिला प्रतिनिधियों का चयन किया गया है। अध्ययन हेतु 84 ग्राम पंचायतों से 24 ग्राम पंचायतों का चयन सरल दैव निदर्शन के लाटरी पद्धति से करके 118 महिला प्रतिनिधियों का चयन पुनः सरल दैव निर्दशन के लाटरी विधि द्वारा किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग कर प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का वैज्ञानिक विधियों से विश्लेषण द्वारा वैध तथा विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त कर अध्ययन विषय की अर्थपूर्ण व्याख्या की गयी है।

उपलब्धियाँ -

सारणी संख्या - 01
आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	21 से 30 वर्ष	17	14.41
2.	31 से 40 वर्ष	40	33.90
3.	41 से 50 वर्ष	45	38.13
4.	51 से अधिक	16	13.56
	कुल योग	**118**	**100**

सारणी संख्या-1 से स्पष्ट है कि 14.41 प्रतिशत उत्तरदाता 21 से 30 वर्ष की आयु वर्ग के मध्य, 33.90 प्रतिशत उत्तरदाता 31 से 40 वर्ष की आयु वर्ग के बीच के हैं, जबकि सर्वाधिक 38.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 41 से 50 वर्ष के मध्य तथा 13.56 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो 51 वर्ष से अधिक के हैं। आरम्भ में पंचायतों में अधिक उम्र के लोगों का प्रतिनिधित्व हुआ करता था, लेकिन वर्तमान में धीरे-धीरे युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है, पंचायतों में उनकी सहभागिता बढ़ी है। हाल में 2019 में हुए पंचायती चुनावों में 21 से 30 वर्ष के युवाओं की भागीदारी बढ़ी है।

सारणी संख्या 02
जाति के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	जाति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सामान्य	90	76.28
2.	अनुसूचित जाति	18	15.25
3.	अन्य पिछड़ा वर्ग	10	8.47
	कुल योग	**118**	**100**

सारणी संख्या 02 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 76.28 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य जाति के हैं, 15.25 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति तथा 8.47 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित हैं। अतः आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता सामान्य जाति से प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, परम्परागत नेतृत्व अधिक भूमि स्वामी एवं प्रतिष्ठित परिवारों के व्यक्तियों पर केन्द्रित था, परन्तु आज गाँव सामूहिक नेतृत्व से सम्बद्ध हो रहे हैं, पंचायतों में सभी जातियों के लोगों की भागीदारी बढ़ रही है।

सारणी संख्या 03
शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	शैक्षिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शिक्षित	110	93.22
2.	अशिक्षित	8	6.78
	कुल योग	118	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश 93.22 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित हैं, जबकि 6.78 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित नहीं हैं, इन साक्षर उत्तरदाताओं में 11 (9.32 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने प्राइमरी, 16 (13.56 प्रतिशत) ने मिडिल, 35 (29.66 प्रतिशत) ने हाईस्कूल, 32 (27.12 प्रतिशत) ने इण्टर, 11 (9.32 प्रतिशत) ने स्नातक तथा 5 (4.24 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने परास्नातक तक शिक्षा ग्रहण की है। अधिकांश उत्तरदाता साक्षर हैं यह एक अच्छा संकेत है, क्योंकि ग्रामीण नेतृत्व के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान में नेतृत्व हेतु शिक्षा को आवश्यक समझा जाने लगा है। इसलिए उत्तराखण्ड में अब पंचायती राज संशोधन 2019 के तहत पंचायत प्रतिनिधियों के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता भी निर्धारित कर दी गयी है। प्रो0 योगेन्द्र सिंह के अनुसार ग्रामीण नेतृत्व में युवा एवं शिक्षित व्यक्तियों द्वारा भाग लेने के कारण भी शिक्षा को आवश्यक आधार समझा जाने लगा है।[6]

सारणी संख्या 04
व्यवसाय के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	खेती	68	57.63
2.	पशुपालन	32	27.12
3.	व्यापार	18	15.25
	कुल योग	**118**	**100**

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश 57.63 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मुख्य व्यवसाय खेती है जबकि 27.12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पशुपालन को तथा 15.25 प्रतिशत ने व्यापार को अपना मुख्य व्यवसाय बताया। नवीन प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप आज गाँवों में एक ऐसे नेतृत्व का प्रादुर्भाव हुआ है जो मुख्यतः साधारण किसान, पशुपालन एवं व्यापारी वर्ग से सम्बद्ध है। ये सभी मध्यम वर्ग से सम्बन्धित हैं, मध्यम वर्ग के व्यक्तियों से सामान्य ग्रामीण जल्दी ही अनुरूपता स्थापित कर लेते हैं।

सारणी संख्या 05
विशेष राजनीतिक दल का समर्थन करने के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

क्र0सं0	विशेष राजनीतिक दल का समर्थन करना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	90	76.27
2.	नहीं	28	23.73
	कुल योग	**118**	**100**

सारणी संख्या 05 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश 76.27 प्रतिशत उत्तरदाता किसी विशेष राजनीतिक दल का समर्थन करते हैं जबकि 23.73 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था कि वे किसी विशेष राजनीतिक दल का समर्थन नहीं करते हैं। अधिकांश का राजनीतिक दल विशेष का समर्थन करना यह इंगित करता है कि वर्तमान में ग्रामीण नेतृत्व राजनीति से सम्बद्ध है।

सारणी संख्या 06
राजनीतिक गतिविधियों में रूचि रखने के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अधिक	69	58.47
2.	सामान्य	31	26.28
3.	कम	18	15.25
4.	बिल्कुल नहीं	-	-
	कुल योग	**118**	**100**

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश 58.47 प्रतिशत उत्तरदाता राजनीतिक गतिविधियों में अधिक रूचि रखती हैं। 26.28 प्रतिशत सामान्य रूचि रखती हैं, जबकि 15.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि वे राजनीतिक गतिविधियों में कम रूचि रखती हैं। साथ ही राजनीतिक गतिविधियों में बिल्कुल भी रूचि नहीं रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या शून्य थी। अधिकांश उत्तरदाताओं का राजनीतिक गतिविधियों में अधिक रूचि रखना इस तथ्य को दर्शाता है कि ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक जागरूकता में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वे विभिन्न राजनैतिक दलों की गतिविधियों से परिचित हो रही हैं। राजनीतिक जागरूकता के इस बदलते प्रभाव ने ग्रामीण समाज को विभिन्न राजनीतिक दलों में विभाजित कर दिया है।

4. निष्कर्ष:

वर्तमान में ग्रामीण नेतृत्व के प्रतिमान परम्परागत लीक से हटकर लोकतांत्रिक एवं आधुनिक हो रहे हैं। ग्रामीण नेतृत्व हेतु शिक्षा को आवश्यक आधार समझा जाने लगा है। गाँवों में नेतृत्व सीमित स्तर से हटकर सामूहिक स्वरूप ग्रहण कर रहा है, नेतृत्व में सभी जातियों के लोगों की भागीदारी बढ़ रही है। ग्रामीण नेतृत्व में युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व बढ़ा है, वर्तमान चुनाव इस बात के प्रमाण है जिसमें ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत सदस्य के वह व्यक्ति भी हैं जिनकी आयु 30 वर्ष से कम है जो यह स्पष्ट करता है कि युवा वर्ग का पंचायतों की राजनीति की ओर रूझान बढ़ रहा है। अधिकांश उत्तरदाताओं का विशेष राजनीतिक दल का समर्थन करना यह इंगित करता है कि वर्तमान में ग्रामीण नेतृत्व राजनीति में सम्बद्ध है। ग्रामीण शक्ति संरचना में राजनीतिक दलों के प्रवेश के कारण गाँव भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों के केन्द्र बन

गये हैं। एक ही गाँव अनेक राजनीतिक दलों से सम्बद्ध होकर विभिन्न प्रकार के नेतृत्व से सम्बद्ध हो गया है। इस राजनीतिक जागरूकता ने ग्रामीण समाज के व्यक्तियों में एकता के बजाय अलगाव, कटुता एवं झगड़े को अधिक उत्पन्न किया है। वर्तमान समय में ग्रामीण जीवन में नेतृत्व के केवल नवीन प्रतिमान ही विकसित नहीं हुए हैं बल्कि उन परिस्थितियों में भी बदलाव हुआ है जो नेतृत्व के एक विशेष स्वरूप का निर्धारण करते हैं। जैसे संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ने के कारण नेतृत्व के निर्धारण में परिवार का महत्व कम हुआ है।

सन्दर्भ:

1. सिंह, वी. एन., एवं सिंह, जन्मेजय (2015) "ग्रामीण समाजशास्त्र" विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली-7, पृ. 131.
2. गुप्ता, एम.एल., शर्मा, डी.डी. (1997) "समाजशास्त्र" साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 753.
3. चिताम्बर, जे.वी. "इन्ट्रोडक्टरी रूरल सोशियोलाजी" न्यू एज इंटरनेशनल प्रा.लि., पृ. 296.
4. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण, पाण्डेय, शील स्वरूप (2021) "ग्रामीण समाजशास्त्र " एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा, पृ. 302 .
5. यादव, राम गणेश, यादव उत्तरा (2014) "ग्रामीण नगरीय समाजशास्त्र" ओरियंट ब्लैकस्वान प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ. 107.
6. सिंह, योगेन्द्र "मार्डनाइजेशन आफ इण्डियन ट्रैडीशन्स" रावत पब्लिकेशन्स, पृ.188-189.